

## बयाद-ए-गालबि समारोह

### प्रीलमिन्स के लिये:

मरिज़ा गालबि

### मेन्स के लिये:

मरिज़ा गालबि का ऊर्दू साहित्य और शायरी नामक वधि में अभूतपूर्व योगदान

## चर्चा में क्यों?

मरिज़ा गालबि द्वारा अपनी पेंशन के बारे में पता लगाने के लिये कोलकाता आने के लगभग 190 वर्ष बाद 21 फरवरी, 2020 से कोलकाता में **बयाद-ए-गालबि** नामक समारोह आयोजित किया जा रहा है।

## मुख्य बदि:

- इस समारोह को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दविस (21 फरवरी) के अवसर पर प्रारंभ किया गया है।
- मरिज़ा गालबि 20 फरवरी, 1828 से 1 अक्टूबर, 1829 के बीच कोलकाता में करिएदार के रूप में रहे।
- मरिज़ा गालबि ने गवर्नर हाउस, राइटर बिल्डिंग और राष्ट्रीय पुस्तकालय सहित महत्त्वपूर्ण स्थलों का दौरा किया, जो वरिष्ठ ब्रिटिश अधिकारियों का नविस स्थान हुआ करता था।

## कार्यक्रम का आयोजन:

- पश्चिमि बंगाल उर्दू अकादमी द्वारा इस अवसर पर आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों में उन स्थानों का भ्रमण किया जाएगा जहाँ गालबि का नविस स्थान था और जहाँ वे आते-जाते रहते थे, जिनमें शमिला बाज़ार और मध्य कोलकाता स्थिति कथल बागान शामिल थे।
- मरिज़ा गालबि की कोलकाता यात्रा की जानकारी को जन-सामान्य तक पहुँचाने के लिये एक स्मारक टिकिट जारी किया जाएगा।
- इस कार्यक्रम में गालबि को केंद्रीय वषिय के रूप में रखते हुए पाँच नाटकों का मंचन किया जाएगा।
- इन पाँच नाटकों के मंचन में 'गालबि और कोलकाता मुशायरा' नामक नाटक को भी शामिल किया जाएगा जो वर्ष 1828 में कलकत्ता मदरसा में आयोजित किये गए एक मुशायरे पर आधारित है जिसमें मरिज़ा गालबि ने भाग लिया था।
- इस समारोह में शकिषावर्दों से लेकर छात्रों और आम लोगों को सम्मलित किया जाएगा।

## मरिज़ा गालबि की रचनाओं का बांग्ला में अनुवाद:

- इस अवसर पर आयोजित अन्य कार्यक्रमों में बनारस में गालबि द्वारा लिखित चराग-ए डायर (Charagh-e Dair) के बांग्ला अनुवाद और उर्दू एवं बंगाली के आठ लघु कथाकारों को प्रस्तुत किया जाएगा, जिनोंने लघु कथाओं के रूप में गालबि के जीवन का काल्पनिक संस्करण पेश किया है।

## मरिज़ा गालबि:

- मरिज़ा गालबि का जन्म 27 दसंबर, 1797 को तुर्की वंश के एक अभजात परिवार में आगरा में हुआ था।
- मरिज़ा गालबि का मूल नाम मरिज़ा असदउल्लाह बेग खान था, गालबि नाम को उन्होंने बाद में अपनाया। उन्होंने इस नाम के साथ अत्यधिक प्रसिद्धि हासिल की।
- मरिज़ा गालबि का ववाह बहुत कम उम्र में हो गया था।
- मरिज़ा गालबि बहादुर शाह ज़फर II के दरबार के महत्त्वपूर्ण कवयियों में से एक थे।
- मुगल सम्राट जो कि उनका छात्र भी था, ने गालबि को डबबर-उल-मुल्क (Dabber-ul-Mulk) और नज्म-उद-दौला (Najm-ud-Daulah) के शाही खतिब से सम्मानित किया।

- उन्होंने 11 साल की उम्र में अपनी पहली शायरी लिखी थी और वे उर्दू, फारसी एवं तुर्की आदि कई भाषाओं के जानकार थे।
- 15 फरवरी, 1869 को दलिली में उनकी मृत्यु हो गई।
- मरिज़ा असदउल्लाह बेग खान 'गालबि' का स्थान उर्दू के सर्वोच्च शायर के रूप में सदैव अकषुण्ण रहेगा।
- उन्होंने उर्दू साहित्य को एक सुदृढ आधार प्रदान किया है। उर्दू और फारसी के एक बेहतरीन शायर के रूप में उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली तथा अरब एवं अन्य राष्ट्रों में भी वे अत्यंत लोकप्रिय हुए।
- गालबि की शायरी में बेहतरीन भाषाई पकड़ मिलती है जो सहज ही पाठक के मन को छू लेती है।

**स्रोत: द हद्दि**

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/kolkata-pays-tributes-to-ghalib>

